4th class Hindi Bodh Ch. 4 Vyakhya

1) माँ तुम केवल-----चलती है साँस।

प्रसंग- प्रस्तुत पंक्तियाँ हमारी पाठ्यपुस्तक हिन्दी बोध की कविता माँ से ली गई हैं।इस कविता की रचयिता कल्पना शर्मा जी हैं।इस कविता में माँ का रिश्ता सबसे प्यारा और ममतामयी बताया है।वह बच्चे के जीवन का आधार और पहली शिक्षिका होती है।

व्याख्या-इन पंक्तियों में कवयित्री कहती है कि माँ तुम केवल हमारी जन्मदाता ही नहीं हो बल्कि हमारे जीवन की आधार भी हो।तुमने ही हमें पाल पोसकर बड़ा किया है और तुमसे ही हमारा जीवन चलता है ।

2) माँ मेरी पहली शिक्षिका---------तुमसे ही पाया।

3) व्याख्या- इन पंक्तियों में कवयित्री कहती है कि माँ मेरी पहली अध्यापिका बनकर ही तुमने मुझे सबकुछ सिखाया है। सही गलत और सच-झूठ के बारे में तुमने ही मुझे ज्ञान दिया है।